डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग

विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर, मधुबनी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

बीए हिंदी प्रतिष्ठा द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र

अंधायुग के आधार पर श्री कृष्ण का चरित्र चित्रण

अंधायुग धर्मवीर भारती द्वारा लिखित गीति – नाट्य है, इस गीति – नाट्य की कथा का आधार महाभारत की कथा है, पर इस कथा को आधुनिक संदर्भों में चित्रित किया गया है। अंधायुग के कृष्ण को गांधारी मर्यादा को तोड़ने वाला कहती है। -

“इसमें संदेह है

और किसी को मत हो

‘अर्पित कर दो मुझ को मनोबुद्धि’

उसने कहा है यह

जिसने पितामह के बाणों से

आहत हो

अपनी सारी ही

मनोबुद्धि खो दी थी?

उसने कहा है यह

जिसने मर्यादा को तोड़ा है बार – बार।”

गांधारी उन्हें मर्यादा को तोड़ने वाले के रूप में देखती है। यहाँ तक कि अंधायुग में कृष्ण के बड़े भाई बलराम भी उन्हें कूट – बुद्धि और मर्यादा हीन मानते हैं। -

“जानता हूँ मैं तुमको शैशव से

रहे हो सदा से ही मर्यादाहीन कूटबुद्धि”

रहे हो सदा से ही मर्यादाहीन कूटबुद्धि”

कृष्ण के संकेत करने पर ही भीम ने दुर्योधन पर अधर्म वार किया था, जिसके परिणामस्वरूप दुर्योधन मारा गया था। कृष्ण की दुर्नीतियुक्त प्रेरणा के कारण ही गांधारी और अश्वत्थामा उन्हें अन्यायी कहते हैं। अंधायुग में कृष्ण को भगवान के रूप में चित्रित नहीं किया गया है बल्कि एक व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है जो कूटनीति से भी काम लेता है, मर्यादा भी तोड़ता है, तथा युद्ध के धर्म का पूर्ण परित्याग कर अधर्म वार करने का संकेत भी करता है। कौरव – पक्ष के सभी लोग यह मानते हैं कि कृष्ण चाहते तो महाभारत के युद्ध को रोका जा सकता था। उन्होंने चतुराई से कौरवों को पराजित कर दिया। अवध्य शिखंडी के द्वारा भीष्म पितामह को मरवाया, युद्धिष्ठिर से अर्द्धसत्य बुलवा कर गुरु द्रोण को अस्त्रहीन करवा दिया और दृष्टद्युम्न ने उनकी हत्या कर दी, कर्ण को भी तब मरवाया जब वह निहत्था होकर अपने रथ के धंसे पहिये को ठीक कर रहा था। भीम को संकेत करके दुर्योधन को अधर्म वार करवाया। इसलिए गांधारी कहती है कि धर्म, नीति और मर्यादा ये सब बस दिखाने की वस्तुएँ हैं –

“मैं ने यह बाहर का वस्तु – जगत अच्छी तरह जाना था

धर्म, नीति, मर्यादा, यह सब हैं केवल आडंबर मात्र,

मैं ने यह बार – बार देखा था।”

अंधायुग में कृष्ण के चरित्र का चित्रण आधुनिक परिप्रेक्ष्य में हुआ है, जो ईश्वर के रूप में नहीं बल्कि नीतिज्ञ युगपुरुष के रूप में चित्रित किये गए हैं जो इतिहास की गति को बदल देने में समर्थ है –

“पता नहीं

प्रभु है या नहीं

किन्तु, उस दिन यह सिद्ध हुआ

जब कोई भी मनुष्य

अनासक्त होकर चुनौती देता है इतिहास को

उस दिन नक्षत्रों की दिशा बदल जाती है।“

अंधायुग में महाभारत की कथा को आधुनिक संदर्भ में चित्रित किया गया है और कृष्ण के चरित्र को भी आधुनिक संदर्भ में चित्रित किया गया है।